विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पाठ्य सहगामी क्रियाओं का प्रभाव : एक अध्ययन

शोध पत्र-शिक्षा

* डॉ. लाखनारायण पाण्डेय ** रमाशंकर पाण्डेय *** वर्षा दुबे

विद्यालय बालक के सर्वांगीण विकास के केन्द्र है, इसलिए अन्य विषयों की भांति पाठ्य सहगामी क्रियाएँ भी उनका अभिन्न अंग है। विभिन्न खेलों, व्यायामों, सांस्कृतिक-साहित्यिक कार्यक्रमों एवं सैनिक-सामाजिक क्रियाकलापों का विद्यालय प्रांगण/क्रीड़ांगन में नियमित अभ्यास विद्यार्थियों के लिए न सिर्फ प्रगति का पथ प्रशस्त करता है, अपितु जीवन में आने वाली समस्याओं और कठिनाइयों को समझने, उनसे जूझने तथा उन पर विजय पाने में सक्षम बनाता है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा विद्यालयों में पाठ्यसहगामी क्रियाओं के आयोजन की स्थिति, शिक्षकों की भूमिका, संसाधनों की उपलब्धता, सफल आयोजन के लिए किए गए प्रयास एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर इन क्रियाकलापों के प्रभाव का अध्‍ययन किया गया है। बालक के स्वस्थ मानसिक विकास के लिए अच्छा स्वास्थ्य आवश्यक है। अरस्तू का कथन भी है कि **"स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।"** विद्यालय समाज का लघु रूप कहा जाता है तथा विद्यालय में ही बालक के भावी जीवन की पूर्ण तैयारी होती है। अतः विद्यालय की जो पुरातन सैद्धान्तिक एवं पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करने की विचारधारा थी, वह अब बदल गयी है क्योंकि परिवर्तन विश्व का अपरिवर्तनशील सिद्धान्त है। जीवन की विषम परिस्थितियों से संघर्ष करते हुये बालक जीवन के उतार-चढ़ाव को वांछित धैर्य, साहस तथा गंभीरता से सफलतापूर्वक प्राप्त कर सके, इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विभिन्न क्रियाओं का समावेश पाठ्यक्रम के अन्तर्गत किया गया है।

विद्यालय के कमरे की चहारदीवारी के भीतर दिया जाने वाला पुस्तकीय ज्ञान आज छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए समुचित नहीं माना जाता, फलस्वरूप उन्हें केवल बौद्धिक या रटन्त विद्या के अतिरिक्त शेष संपूर्ण आंतरिक शक्तियों के विकास के लिए मैदान में संचरण करने का अवसर प्रदान करना अनिवार्य समझा जाने लगा। इस कारण पाठ्यक्रम में पाठ्य सहगामी क्रियाओं को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया। माध्यमिक शिक्षा आयोग, राष्ट्रीय शिक्षा आयोग तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने पाठ्य सहगामी क्रियाओं को पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर इन्हें शैक्षिक प्रक्रिया का एक आवश्यक अंग माना है क्योंकि इन क्रियाओं के द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास अवश्यभांवी है। पाठ्य सहगामी क्रियाएँ वह क्रियाएँ है जो बालक के कक्षा-अध्ययन से संबंधित न हों, परन्तु जिनमें सहभागिता कर विद्यार्थी अपना नैतिक, शारीरिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास कर सके। वे पाठ्यक्रम के अनन्य अंग है। विद्यालयों में कितने प्रकार की पाठ्य सहगामी क्रियाएँ रखी जाएं, इसकी कोई सीमा रेखा नहीं खींची जा सकती। विद्यालय के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों तथा स्थानीय परिस्थितियों को दृष्टिगत रखकर ही इन क्रियाओं का आयोजन किया जा सकता है। इन क्रियाओं में साहित्यिक, संगीत तथा नाट्य, खेलकूद तथा शारीरिक व्यायाम, शैक्षिक, कला, सैनिक शिक्षा, सामाजिक तथा आर्थिक एवं नैसर्गिक क्रियाएँ सम्मिलित हैं। ये क्रियाएँ विद्यार्थियों को नैतिकता, नेतृत्व, सामुदायिक जीवन, नागरिकता, सदाचार, अनुशासन तथा विद्यालय के भावनात्मक उन्नयन आदि की शिक्षा प्रदान करती है। जे.आर. शैनन ने लिखा है कि "बालक के सर्वांगीण एवं आकर्षक व्यक्तित्व निर्माण की दृष्टि से पाठ्यसहगामी क्रियाओं का महत्व कक्षा-कार्य की अपेक्षा कहीं अधिक है।" ठीक ही कहा गया है कि विश्व के महान नेताओं का उद्भव स्थल कक्षा-कक्ष न होकर वे स्थल हैं, जहाँ पर उन्होंने सहगामी क्रियाओं में भाग लिया।

आवश्यकता एवं महत्व : वर्तमान समय में विद्यालय बालक के सर्वांगीण विकास के केन्द्र है, इसलिए अन्य विषयों की भांति पाठ्यसहगामी क्रियाएँ भी उनका अभिन्न अंग हैं। विभिन्न क्रियाओं का नियमित आयोजन विद्यार्थियों के लिए न सिर्फ प्रगति का पथ प्रशस्त करता है, अपितु जीवन में आने वाली समस्याओं और कठिनाइयों को समझने, उनसे जूझने तथा उन पर विजय पाने में सक्षम बनाता है। उनमें नेतृत्व, सहयोग, आत्मनियंत्रण, तथा त्याग की भावना का विकास होता है। साथ ही उनका आत्म विश्वास सुदृढ़ होता है और उनमें जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण का विकास होता है। प्रायः यह देखने में आया है कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में बहुत कम छात्र भाग लेते हैं क्योंकि शिक्षकों को जितना ध्यान और सहयोग इन क्रियाओं के संचालन एवं प्रशासन में देना चाहिए, वह नहीं देते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ छात्रों में यह

*शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश
**भोज मुक्त विश्वविद्यालय, भोपाल
***वरिष्ठ अध्यापक, शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सीधी खुर्द, मध्यप्रदेश

भी भ्रांति है कि इन गतिविधियों में सहभागिता करने से अध्ययन के लिए समय कम मिल पाएगा, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनके शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर पड़ेगा। इसलिए शोधर्थी द्वारा मध्यप्रदेश के रीवा जिलान्तर्गत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में इन क्रियाओं के आयोजन की स्थिति और इनमें सहभागिता करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर इन क्रियाओं के प्रभाव का अध यन किया गया।

शोध के उद्देश्य: प्रस्तुत शोध निम्नांकित उद्देश्यों का ध यान में रखकर किया गया है– 1. शासकीय उच्चतर माध यमिक विद्यालयों में पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के आयोजन की स्थिति एवं व्यवस्था का अध्ययन करना। 2. इन क्रियाओं के आयोजन एवं सहभागिता के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की रुचि एवं रुझान का अध्ययन करना। 3. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का विद्यार्थियों के अधिगम उपलब्धि ा स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव एवं सह-संबंध का अध्ययन करना। 4. विद्यालयों में इन क्रियाओं के आयोजन में आने वाली रुकावटें, उदासीनता एवं समस्याओं का पता लगाना। 5. विद्यालयों के पाठ्य सहगामी क्रियाओं के सफल आयोजन, अधिकाधिक छात्र सहभागिता एवं उद्देश्यपरकता हेतु व्यावहारिक उपाय सुझाना।

शोध परिकल्पनाएँ: प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा की गयी परिकल्पनाएँ निम्नवत् हैः 1. विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का पर्याप्त आयोजन नहीं किया जाता है। 2. विद्यालयों में खेलों के लिए पर्याप्त खेल सामग्री एवं आर्थिक सुविधाओं का अभाव है। 3. पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति शिक्षकों में पर्याप्त रुचि का अभाव है। 4. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है। 5. खेलकूद एवं सामाजिक-सैनिक क्रियाओं में भाग लेने वाले और भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है। 6. साहित्यिक-सांस्कृतिक क्रियाकलापों में सहभागिता करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि इनमें सहभागिता न करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से बेहतर है। 7. यदि विद्यार्थियों को पाठ्य सहगामी क्रियाओं में अधिक से अधिक सहभागिता के लिए प्रेरित किया जाए तो उनकी अभिव्यक्ति के साथ-साथ अधिगम उपलब्धि स्तर में सकारात्मक वृद्धि होगी।

न्यादर्शः न्यादर्श के रूप में रीवा नगर के 10 शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, इन्हीं विद्यालयों के 10 प्राचार्यों, 30 शक्षकों एवं 9 वीं कक्षा के 200 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।

शोध उपकरणः अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु प्राचार्य – साक्षात्कार प्रपत्र, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए पृथक-पृथक प्रश्नावली, एवं शाला-अभिलेख अवलोकन प्रपत्र आदि उपकरणों का निर्माण कर प्रयोग किया गया। इन उपकरणों के अन्तर्गत विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के आयोजन, सफल संचालन, छात्रों एवं शिक्षकों की इनमें अभिरुचि एवं सहभागिता, भौतिक एवं आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता, प्रशिक्षण, मार्गदर्शन एवं अभिप्रेरणा, समस्याएँ एवं सफल आयोजन हेतु व्यावहारिक सुझाव से संबंधित प्रश्न सम्मिलित थे। साथ ही शाला-अवलोकन एवं अभिलेख अध्ययन द्वारा इन क्रियाओं में सहभागिता करने वाले, एवं न करने वाले विद्यार्थियों के अनुभव, दृष्टिकोण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य तुलना एवं सह-संबंध का आकलन किया गया।

परिणाम एवं निष्कर्ष : शोध के प्रमुख परिणाम एवं निष्कर्ष निम्नवत् हैं– • पाठ्यसहगामी क्रियाओं का आयोजन सभी विद्यालयों में किया जाता है, परन्तु सभी क्रियाएँ हर विद्यालय में आयोजित नहीं की जाती है। ये आयोजन राष्ट्रीय उत्सवों यथा – स्वतंत्रता दिवस, गाँधी जयन्ती, बाल दिवस, गणतंत्र दिवस पर विशेषतः होते है। • सभी विद्यालयों में एन.सी.सी. तथा स्काउट-गाइड एवं 50 प्रतिशत विद्यालयों में रेडक्रास एवं राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) का आयोजन किया जाता है। • अधिकांश विद्यालयों (70 प्रतिशत) में पर्याप्त आर्थिक सुविधाओं की अनुपलब्धता के कारण खेल सामग्रियों का अभाव है। • यद्यपि सभी विद्यालयों में खेलों एवं सैनिक क्रियाओं के आयोजन के लिए प्रशिक्षित शिक्षक उपलब्ध है तथा साहित्यिक -सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभारी भी नियुक्त हैं, तथापि 50 प्रतिशत प्रभारी शिक्षक इन क्रियाओं के आयोजन में पर्याप्त रुचि नहीं लेते।

• अधिकांश प्राचार्यो (80 प्रतिशत) ने मत व्यक्त किया कि साहित्यिक-सांस्कशतिक क्रियाकलापों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बेहतर होती है, जबकि सामाजिक-सैनिक क्रियाकलापों में सहभागिता करने वाले और न करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि लगभग समान ही रहती है। • शत-प्रतिशत प्राचार्यो ने स्वीकार किया कि पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में सक्रिय सहभागिता करने वाले विद्यार्थियों में नेतृत्व, सहयोग, सहानुभूति, मिल-जुलकर कार्य करना, नैतिकता आदि गुणों का विकास होता है।

• 14 प्रतिशत विद्यार्थी – माता-पिता, 17 प्रतिशत सहपाठी छात्रों तथा 30 प्रतिशत शिक्षकों के प्रोत्साहन पर एवं शेष 39 प्रतिशत स्वतः प्रेरित होकर विविध पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सहभागिता करते पाए गए। • 45 प्रतिशत छात्रों को इन क्रियाओं में प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्राप्त हुए हैं, जबकि 55 प्रतिशत छात्र इससे वंचित है। स्वाभाविक है कि पुरस्कार उन्हीं विद्यार्थियों को प्राप्त हुए जिन्होंने इन गतिविधियों में पूर्ण रुचि के साथ सक्रिय सहभागिता करते हुए बेहतर प्रदर्शन किया। इस प्रकार इन क्रियाओं में रुचि और पुरस्कार के मध्य धनात्मक सह समबन्ध पाया गया। • इन क्रियाओं में सहभागिता करने वाले 84 प्रतिशत विद्यार्थियों के अनुसार इन क्रियाओं का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है, जबकि 16 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कोई प्रभाव महसूस नही किया। •

52 प्रतिशत विद्यार्थियों ने दृढ़ विश्वास एवं अभिमत व्यक्त किया कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सक्रिय सहभागिता से उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है, अधिगम स्तर में वृद्धि होती है (50 प्रतिशत), अभिव्यक्ति क्षमता का विकास होता है (42 प्रतिशत), तथा शारीरिक, मानसिक क्षमता में अभिवृद्धि होती है (37 प्रतिशत)। • सभी शिक्षकों का अभिमत है कि पाठ्यसहगामी क्रियाएँ शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष को मजबूत बनाते हुए उनके सर्वांगीण विकास में सहायक हैं। • यह पाया गया कि मात्र 33 प्रतिशत शिक्षक ही विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के आयोजन में हमेशा सहयोग करते हैं, जबकि अधिकांश (67 प्रतिशत) शिक्षक इनमें यदा-कदा ही सहयोग करते है। • शालाओं के अभिलेख अवलोकन से ज्ञात हुआ कि खेलों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की परीक्षा में श्रेणी का औसत माध्य खेलों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों के औसत माध्य से 6.95 अधिक था। अतः कहा जा सकता है कि खेलों में भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, भाग लेने वाले विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर है। • साहित्यिक-सांस्कृतिक क्रियाकलापों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना में 7.71 औसत माध्य के साथ बेहतर पायी गयी। • सामाजिक-सैनिक क्रियाकलापों में भाग लेने वाले और भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थ अन्तर (df = 198, t value : 1.55) नही पाया गया। इस प्रकार निष्कर्षतः यह कहना सर्वथा उचित है कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है, परन्तु यह कहना कि उनकी शैक्षिक उपलब्धि भाग न लेने वाले विद्यार्थियों से कम होती है, तर्क संगत नही है। इसका प्रमुख कारण उनका पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेना नही है अपितु विद्यालयों में इन क्रियाओं का संचालन ठीक ढंग से नही होना तथा शिक्षकों का पर्याप्त सहयोग प्राप्त न हो पाना है। अतः इन क्रियाओं के पूर्ण मनोयोग से नियमित आयोजन एवं संचालन में सावधानी तथा विद्यार्थियों के उचित पथ-प्रदर्शन, मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता है ताकि विद्यालयीन शिक्षा की सार्थकता सिद्ध हो सके।

***सुझाव* :** 1. पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति प्राचार्यों तथा शिक्षकों में निष्ठा की भावना एवं उनके आयोजन, संचालन तथा पूर्ण सम्पादन तक तत्पर और संलग्न रहना आवश्यक है। 2. प्राचार्यें तथा शिक्षकों को स्वयं इन क्रियाओं में भाग लेना चाहिए एवं एक सहगामी सदस्य के रूप में छात्रों का पथ प्रदर्शन करना चाहिए। 3. छात्रों को पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रेरित एवं उत्साहित किया जाना चाहिए। साथ ही उन्हें इन क्रियाओं में सहभागिता से मिलने वाले प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष लाभों से परिचित कराया जाना चाहिए। 4. पाठ्य सहगामी क्रियाओं के सुचारू रूप से संचालन के लिए यथेष्ठ धन की व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे कि साधनों के अभाव के कारण विद्यार्थियों को इन क्रियाओं में भाग लेने से वंचित न होना पड़े। 5. समय विभाग चक्र में इन क्रियाओं के लिए यथोचित कालखण्ड निर्धारित होने चाहिए। विशेष ध्यान दिया जाय कि एक ही कालखण्ड में अनेक क्रियाएँ न रखी जॉय ताकि हर विद्यार्थी को इच्छानुसार क्रियाओं में भाग लेने का अवसर प्राप्त हो सके। 6. पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संयुक्त आयोजन-संचालन हेतु प्रभारी शिक्षकों के लिए समय-समय पर प्रशिक्षण एवं उन्मुखीकरण की व्यवस्था की जानी चाहिए। 7. सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले शिक्षकों एवं छात्रों का मनोबल बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन स्वरूप यथोचित पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाना चाहिए। 8. पाठ्य सहगामी क्रियाओं का यथोचित उपयोग शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ

Chawla, Neetu and Agrawal, Rekha (2005). "Influence of Co-operative Learning on Academic Achievement", Journal of Indian Education. Vol. XXXI, No. 2, August. गर्ग, मश्दुला (2002). "कक्षा में बच्चों की सहभागिता कैसे बढ़ाए?" प्राइमरी शिक्षक, अंक : 3 जुलाई। Mohanty, Jagannath (2005). "Education Administration", Supervision and School Management, New Delhi: Deep & Deep Publications, pp. 374-384. Panda, B.N. (2004). "Effect of Co-operation Learning Approach in Enhancing Achievement and Sociability among Elementary School Children" National Seminar on Good Innovative Practices and Promotion of Action Research at the Elementary Sage of Education. IGNOU: (DEP-SSA) 25-27 March, 2004. पाठक, पी.डी. (1974). "भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ", आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर। Rath, Kumuda Kanta (2002). "Retaining Children in School through Play-way and Activity based Methods", The Primary Teacher, Vol. XXVII, No. 3, July. Sahu, S.K. (2003). "Developing Students Personality Through Work", Teacher Support, Vol. 1, No. 3 August, NCTE.